अंतरा-शब्दशक्ति

नवांकुर

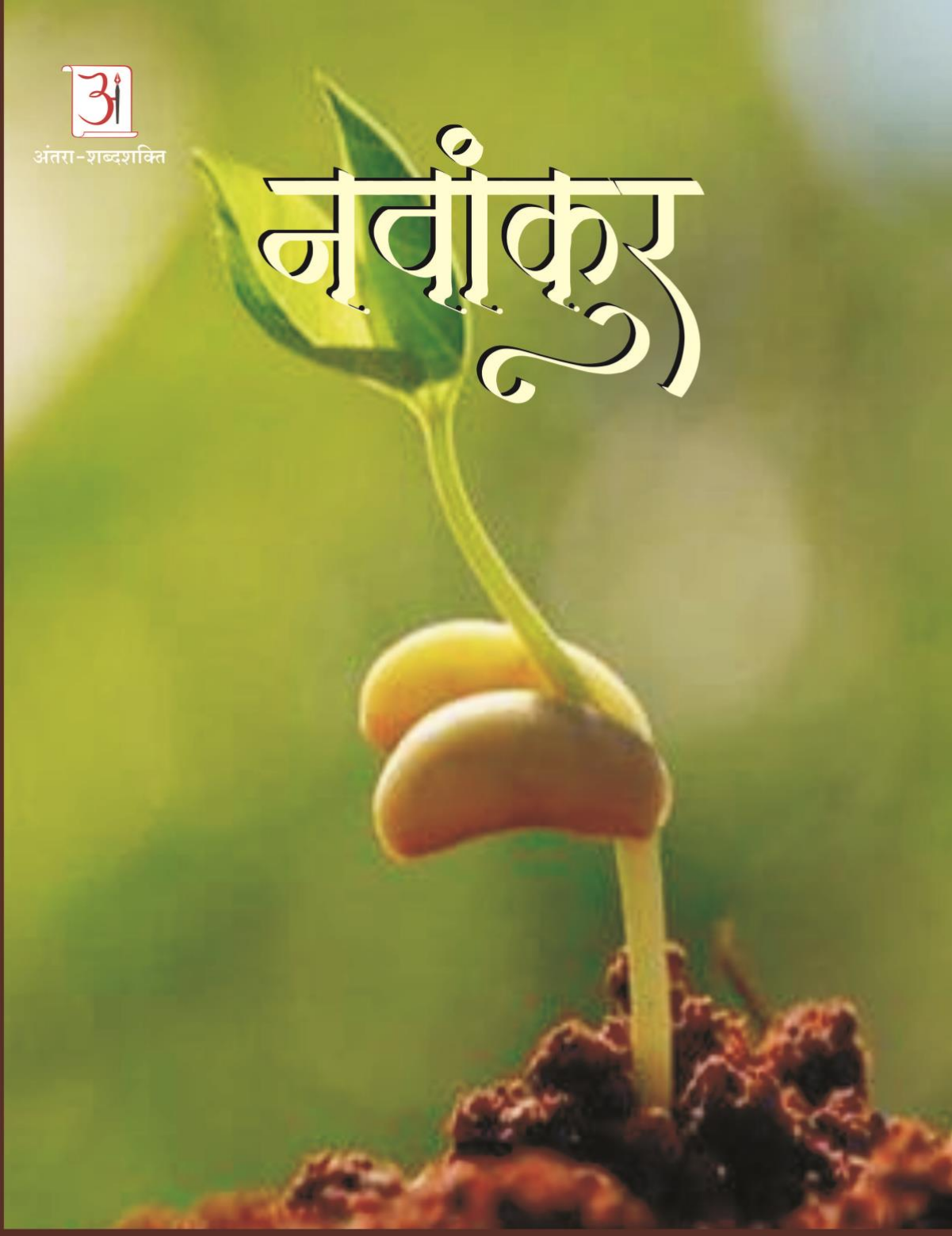

काव्य संग्रह

रेखा कुमार

नवांकुर

(काव्य संग्रह)

रेखा कुमार

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN 978-93-86666-10-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा एस २०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष (कार्या.) ०७६३३ २५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ रेखा कुमार
मूल्य ५५.०० रुपये
आवरण चित्र संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Navankur by Rekha Kumar

वैधानिक चेतावनी इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

चंद बातें अपने मन की

जीवन रूपी अथाह सागर में इन्सान अपने भीतर बहुत कुछ समेटे रहता है।रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अनेकानेक प्रसंग देश, समाज और हमारे ही परिवार में घटित होते हैं, जिन्हें महसूस कर कलमबद्ध करने की कला एक कलमकार को विरासत में मिली होती है। रचनाकार,चाहे वह कवि,साहित्यकार, लेखक या कहानीकार हो वह देश, परिस्थिति और काल का एक हिस्सा होता है। हिस्सेदार होने की वजह से उसका मन मौजूद हालातों से उद्वेलित होते रहता है। भावनाएँ अन्तर्मन में हिलकोरे मारते हुए अभिव्यक्ति का मार्ग ढूँढती है और तब कलम का सिपाही, रचनाकार, कविता कहानी और लेख के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर आत्मसंतुष्ट होते हैं।

मैंने भी अपनी मनोभाव को स्याही की कुछ अनमोल बूँदों की सहायता से काग़ज के उजले पन्नों पर अंकित कर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को ही बल प्रदान करने की कोशिश की है। ज़िन्दगी की विविधताओं के बीच से गुज़रने के क्रम में मेरी दृष्टि ने जो देखा, सजग कानों ने जो सुना, आन्तरिक मन ने जो महसूस किया, संवेदनशील हृदय ने जो भोगा, उन सब का प्रतिफल है मेरा यह काव्य संकलन "नवांकुर" जिसे सुधि पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रही हूँ। वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था मैं निरंतर चौड़ी होती खाई को पाटने के अथक प्रयासों की विफलताओं ने मेरे कवि मन को चुनौतीया दी,उसी का प्रतिफल है कि मेरी लेखनी से इन चुनौतियों पर प्रहार हेतु गीतों एवं कविताओं के रूप में अस्त्रों की उत्पत्ति हुई।

प्रेम के बिना जीवन रसहीन होता है और भावों की शुद्धता से प्रेम प्रस्फुटित होता है। मैंने कल्पनाओं के सहारे इन ही शुद्ध भाव से अलौकिक प्रेमानुभूति को अपने शब्दों का जामा पहनाने की कोशिश की एवं अपने काव्य संकलन में समाहित करने का विनीत प्रयास किया है।

समाज के किसी भी तथ्य या पाठकों के किसी भी समूह ने मेरे अथक प्रयास को कोसा या सराहा तो मुझे आत्मसंतोष होगा। अपने लेखन को एक नया आयाम देने की कोशिश में मुझे मेरे पति, बच्चे एवं कुछ अज़ीज़ दोस्तों का साथ और प्रोत्साहन हमेशा मिलता रहा है। निसंदेह मेरी माँ और गुरुजनों का आशीर्वाद सर्वोपरी है। यह मेरा प्रथम प्रयास है। गलतियाँ स्वाभाविक हैं। त्रुटियों की ओर इंगित करने वालो को अपना हितैषी समझ अपना धन्यवाद दूँगी।

रेखा कुमार, कोलकाता

अनुक्रमणिका

1.	सफर अभी तो शुरू हुआ है	7
2.	बरसात	8
3.	बोझिल मन	9
4.	मौन	10
5.	कश्मकश कैसी है ये?	11
6.	सुहाना दिन	12
7.	नाव नहीं, पतवार नहीं है	13
8.	जलजला	14
9.	मुखौटा	15
10.	अन्तर्मन में द्वन्द क्यों है	16
11.	खुश हूं मैं	17
12.	रिश्ता	18
13.	निःशब्द	19
14.	स्मृतियाँ	20
15.	स्वभाव	21
16.	नाविक	22
17.	निमंत्रण	23
18.	वह उदास लड़की	24

19. मीठा दर्द 25
20. प्रश्न 26
21. लालसा 27
22. सोच 28
23. पयोधि 29
24. किसे सींचूँ? 30
25. आस्था के दीपक 31
26. ख्वाहिशें 32

सफर अभी तो शुरू हुआ है

क्या सोच रहे ये क्यूँ सोचूँ
सफर अभी तो शुरू हुआ है
दूर शिखर तक जाना होगा !
जाने कितने व्यवधान पड़ेंगे
कटु वाच्य व्यंग्य को सहना होगा
उस पार मिलेंगे मंज़िल जब
इस पार की बातें क्यूँ सोचूँ !
जब खुद ही पार उतरना है तो
घुट-घुट आँखें भिंगोऊँ क्यूँ?
तेरी आशाऐं मेरे मन में
गोते खूब लगाती है,
इच्छाएँ अभिलाषाओं के
झूले पे धूम मचाती है।
जब ख्वाबों और ख्वाहिशों में
अनहद द्वन्द ठन जाती है।
तब खुद ही अपने सपनों को
चुन- चुन कर पार लगाना होगा।
तब बातें कौन बनायेगा
इस मोहजाल का क्या सोचूँ?
क्यूँ शान्त रही इतने दिन मैं
इतना भी ऐसा विचरना क्यूँ था
टाल दिया होता मत को
पतझड़ में बात बिगड़ना ही था।।

बरसात

बरसात के आवारा बादल के साथ
भूले से हवा का
कोई एक झोंका,
भेज दी है तूने झरोखों के पार
शीतल हवाओं के साथ उलझी
कुछ बारिश की बूँदें छूकर मेरे लटों को सहला गई।
मेरी कपोल की उदासी
माथे पे सिकुड़ी लकीरों को धो गई,
बादल के टुकड़े के संग मचलते
झोंकों को ख़बर भी नहीं
कि उसने क्या कर डाला।
चुपके से ही खेल खेल में
उसने तुम्हें दूर देश से
लाकर मेरे ख्यालों में छोड़ दिया।

बोझिल मन

लिखना चाहूँ लिख न सकूँ तो
आँसू मेरा मुझपर हँसता
आँसू है कुछ ऐसा पानी
गीतों में है झर झर बहता।

तोड़ रहा शब्दों के पत्थर
बहता आँसू भीतर-भीतर
अर्थ वहीं हैं दर्द वहीं हैं
हर आँसू है अक्षर-अक्षर।

आँसू है कुछ ऐसा पानी
गीतों में है झर-झर बहता
भारी मन मेरा भी जैसे
पलको में है सबकुछ कहता।

नाव नहीं पतवार नहीं है,
दर्द भरी मझधार मिली है।
आँधी ले हर आह उठी है,
आँसू में पीड़ा उभरी है।

व्यथा वेदना की लहर तले,
पंक्तिबद्ध हो आँसू बहता।
आँसू है कुछ ऐसा पानी,
गीतों में है झर-झर बहता।

गीत लिखूँ कुछ ऐसा जिसमें,
दर्द भरा अक्षर हो हँसता।
भारी मन मेरा भी ऐसा,
आँसू बनकर सबकुछ कहता।

मौन

सदा ही मौन रहकर मैं, प्रीत स्वीकार करती हूँ,.
स्त्री हूँ मैं सहनशीला,. सृजन का द्वार गढती हूँ।

स्मित मुस्कान से हरदम
दुःखों को मैं ही छलती हूँ
मुकरती मै कभी नहीं हूँ
मुस्किलें कोई आ जाए,
अतिथि मान लेती हूँ
जतन से मान देकर के
बड़े भावों से मैं हरपल, मधुर सत्कार करती हूँ।

स्त्री हूँ मै धरा बनकर
सुघड़ संसार रचती हूँ,
मौन रहकर भी मैं हरक्षण
सृजन श्रृंगार गढती हूँ।
अमावस के अंधेरों में भी
आलोकित तिमिर मुझसे
धरा के ध्वस्त उम्मीदों से भी
सृष्टि का विस्तार गढती हूँ।
स्त्री हूँ मैं सहनशीला,. सृजन का द्वार गढती हूँ! !!

कश्मकश कैसी है ये?

किस उलझन में उलझी हूँ मैं
किस चाह के पनाह में
हुई खुद में गुम सी हूँ मैं
करती बसर खुद में ही हूँ,
फिर भी कहीं भटकी हूँ मैं
इक अजनबी एहसास की
निकली हूँ मैं तलाश में,
ऐ जिन्दगी तू ही बता
हूँ कौन मैं? कहां हूँ मैं?
कश्मकश कैसी है ये
किस उलझन में उलझी हूँ मैं,..!

सुहाना दिन

फिर छा गई घटाऐं सावन का सुहाना दिन
बिलख रही है बहन कहीं एक,.. भैया तेरे बिन,..
लम्बी जुदाई देकर
तुम भी रोये थे उस दिन....
तड़प उठी थी बहन तुम्हारी
इक इक आँसू गिन;
कसम तुम्हारी खायी थी वो
जालिम का दिल छिन
जगदम्बे को भेंट चढ़ाने
लाऐंगी एक दिन!
कुत्तों के टुकड़े को देगी
चिलों को गिन-गिन
तड़पा कर मारेगी वो तो
बूँद-बूँद के बिन;
बस दो प्यारा शब्द हवा से
कहे कोई अबला बहिन
जैसे राग कोयल कूकी हो खाकी
गुँज उठी है चारो दिशाऐं,
केवल राखी राखी,
मन भौंरा बौरा कर गाता
यादों के पलछिन
तड़प रही है बहन कोई फिर,... भैया तेरे बिन,..! !

नाव नहीं, पतवार नहीं है

नाव नहीं, पतवार नहीं है
दर्द भरी मझधार मिली है।
आँधी ले हर आह उठी है,
आँसू में पीड़ा उभरी है!

मन कहता उस पार चलूँ मैं,
दर्द उठे चुपचाप सहूँ मैं।
बहता आँसू रोक सकूँ मैं,
नम पलकों का मीत बनूँ मैं!

व्यथा वेदना की लहर तले
पंक्तिबद्ध हो आँसू बहता।
आँसू है कुछ ऐसा पानी,
गीतों में है झर- झर बहता!!

लिखना चाहूँ लिख न सकूँ मैं,
आँसू मेरा मुझ पर हँसता।
बेबस साँसें रह-रह मेरे,
धड़कन में है टीस सा भरता!!

जलजला

प्यार केवल वासना का
जलजला होता नहीं है
गीत बन जाए अगर तो
प्यार का हर क्षण अमर है,
टूटता हो आदमी जब
मुश्किलों की मार से
लड़ रहा जब हर जगह वह
स्वार्थ की तलवार से
तब ह्रदय की भावना ही
बन सकेगी रौशनी
साधना बन जाए गर तो
प्यार का हर क्षण अमर है!
मत कहो है प्यार दो पल
खुशबुओं से कुछ नहीं
राग बन जाए यही तो
फैलता है सब कहीं
तप रहे सुखे अधर पर
अमृत बन जो चू गया
फूल जैसी मधुरता का
एक वह चुंबन अमर है!!

मुखौटा

अपनेपन का मुखौटा ओढ़े
क्यों बार बार खड़े हो जाते हो
मेरे सम्मुख झूठी तारीफों के पुल
बांधते नहीं थकते तुम,
तारीफों के पार तुम्हारी अतृप्त इच्छाओं
आकांक्षाओं और लोलुप जिह्वा लिए
ताकती मुझे, मेरा परिहास करती सी
मेरे अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाती,
क्यों बार-बार अवतरित होते हो
मेरे सम्मुख प्रेम की परिभाषा लिए
थोपना चाहते हो मुझपर उस व्याख्या को
जिस पर तुम स्वयं खरे नहीं उतरते,
क्यूँ थोपते हो मुझपर
झूठ और फरेब में डूबे सम्मान के लुभावने शब्द
जिसमें केवल मात्र शोर है संगीत नहीं,
क्यों उपस्थित होते हो मेरे समक्ष
मर्यादा और परम्पराओं की दीवार लिए
जिसकी ओट में छिप जाता है
तुम्हारा बौनापन, तुम्हारा असंयम
तुम्हारी कुत्सित मंशा मुझे पाने की
तुम्हारी अभिलाषा निचोड़ लेती है
मेरा बूँद -बूँद रक्त
क्षत विक्षत मेरी आत्मा
मेरा घायल अन्तर्मन तुम्हें दिखाई नहीं देते!!

अन्तर्मन में द्वन्द क्यों है

अपने आप से जीने मरने का द्वन्द
शोक उल्लास का द्वन्द
जिन्दगी के हर पल का
जो जिया उसका भी द्वन्द
जो नहीं जिया उसका भी द्वन्द
क्यूँ है ये द्वन्द?
व्यथा उभरती है कभी
संतुष्टि साँसों से निकलती है
धीमे से कभी
फिर खो जाती है
इच्छाओं, आकांक्षाओं में कहीं
जिन्दगी यूँ ही चल रही है द्वन्द में
विश्वास प्रक्रिति में है
बाहर भीतर हर ओर
मानो या ना मानो
मान गये तो स्थिरता
द्वन्द का फिर कहीं कोई अविश्वास नहीं
न छल, न भागमभाग
आनंद, उल्लास से
परिपूर्ण जिन्दगी तेरी और मेरी।

खुश हूं मैं

बहुत कुछ खोने के बाद भी खुश हूं मैं
यह सोचकर कि
मेरे पास कुछ खोने को था तो सही,
अपनों और परायो से
अनगिनत ठोकरें
खाने के बाद भी खुश हूं मैं
क्योंकि दूसरों के
दु:ख से दु:खी और दूसरों के सुख से
हर्ष महसूस करने के लिए
एक संवेदनशील दिल है मेरे पास. ...
सत्य को असत्य से
मिली अनवरत पराजयों
के बावजूद भी खुश हूं मैं,
सत्य की अंततः साश्वत जीत की
सौंधी सौंधी सुगंध की कल्पना कर
जीवन की तमाम अनिश्चितता
और जटिलताओं के बावजूद खुश हूँ मैं,
क्योंकि उनसे लड़ने के लिए
तुम्हारी प्रेरणा रूपी अमोध अस्त्र जो मेरे पास है! !!!

रिश्ता

रिश्ता बिना एहसास का
ये दर्द है कुछ खास सा,
ना जिन्दगी इस में कोई
ना ही है कुछ अरदास सा,
बस बंधनों की दास्तान
और उलझनों की रस्सियां,
उलझी हुई मैं भी यहां
उलझी हुई सी सिसकियाँ,
है मंजिलें ओझल यहां
और रास्तों पर किरचियां,
मंजिल जहाँ बस मौत है
और बेबसी है हमसफर,
कुछ प्रश्न है,अनुत्तरित,
दे दो मुझे उत्तर जरा
मैं अपूर्ण हूँ या पूर्णता
रिश्तों की कोई भूल हूँ?
विधवा हूँ या अनुचारिका?
एक सधवा या व्यभिचारिका?
तुम कौन हो? साथी मेरे
तुम पूर्णता या एक,.. रजा?

निःशब्द

जिन्दगी जब निःशब्द होकर
हार जाए
समय अपने आगोश में
पनाह देकर
फिर से
जीने की वजह
ढूंढ ही देती है,
विषम परिस्थितियों में
अक्सर अपने छोड़ जाते है
तभी कोई
उम्मीद का आंचल थामे
हौले से
कानों में कह जाता है
उठो नयी दिशाएं
बांहे फैलाये
तेरे इंतजार में खड़ी है
जाओ ढूँढ लो
अपना ठिकाना
नया जहान के आगोश में
तेरा विहान है!!

स्मृतियाँ

अतीत की स्मृतियाँ
वर्तमान की उपलब्धियाँ
भविष्य की आशाओं में
पिघलती गयी मोम सी,
व्योम में झाँकते
नयनों के जोड़े ने
पाया हर तरफ
अविश्वास, ढोंग, फरेब
चेहरे पर लगे
मुखौटों के पीछे
दिल के किसी कोने में
आस्था का दीप
फिर जगमगाया
और मानस पटल के
सतरंगी सपने
मुझे अपनी गिरफ्त में
समेटते गये
मैं,
अर्धविक्षिप्त सी टूटती गई
जुड़ने की उम्मीदों के साथ!

स्वभाव

हारकर चुप बैठ जाना
उसके स्वभाव में ही नहीं,
अनजाने राहों पर चलकर भी
मंजिल तक पहुंचने की
जिद है उसकी,
बंद रास्तों से लौट आना
उसकी हार नहीं
क्योंकि लौटना
हार मानना नहीं है,
बल्कि नये उत्साह से भरकर
नये राह की तलाश है
मंजिल तो हर हाल में
पाना है उसे
फेके हुए पत्थर
चोट पहुंचाते हैं मगर
प्रतिशोध नहीं लेती कभी
क्योंकि उन्हीं पत्थरों की
नींव पर इमारत खड़ी करने का
हुनर है उस में !

नाविक

नाविक, मेरे ह्रदय सिंधु में
उमड़ रही है लहरें,
तू ले जाता कूल निकट है
मैं जाती हूँ गहरे।
पथ में अगणित भँवर पड़े हैं
आँधी है तूफान,
और निराशा की
रजनी है काली, कहना मान।
बहने दो जीवन नौका को
अब मत लगा सहारा
इस धरती में भार रूप है
जीवन सखे हमारा!!!

निमंत्रण

एक मोहनी निमंत्रण और कुछ तो नहीं
एक मोहक दृष्टि का ऋण और कुछ तो नहीं;
मैं धधकती ज़ेठ में भी पनघटो तक आ गई
दूरियों से धडकनों की आहटों तक छा गई
एक ललचाया हुआ क्षण और कुछ तो नहीं,
मेघ आच्छादित हुआ जब
लगा पुलकित कहीं होगी धरा
किन्तु छबीला छल कर मुझको,
इक बूँद आँसू सा गिरा
बस मिला एक हरियाया हूआ तृण,
और कुछ तो नहीँ तूम रहे "तुम" मै रहीं "मैं"
मैं छली तुम भी छले
और दो परछाईंयो की भांति जब-जब भी मिले
लगा एक ठुकराया हुआ ठिकरा सा,और कुछ तो नहीं,
अधर तो प्यासा रहा और आँखों को पानी मिला
प्यास को असमर्थ सागर सा प्रणय दानी मिला,
एक अनचाहा समर्पण,और कुछ तो नहीं
लेखनी ने दे दिए स्वर लय में गुनगुनाती रही
कागजों पे झूठ लिखकर, सत्य झुठलाती रही
एक निरर्थक परिश्रम, और कुछ तो नहीं।।

वह उदास लड़की

वह उदास लड़की
जिस दिन होगी अपने स्वर्ग में
उस दिन
अपने नर्क की याद सताएगी उसे
बैठी होगी उस समय भी वह उदास,
खुद को खोजती हुई
अपनी तमाम इच्छाओं को
बांध कर पोटली में
वह फेंकना चाहती होगी उस आग में
जिस में रहते हुए भी
वह राख नहीं हो सकी
नहीं आंक सकी वह जिस में
अपनी तकलीफ और
खुद को जान लेने की
अपनी उत्सुकता
ले जाएगा कोई क्या उसे
उसके स्वर्ग और नर्क दोनों से दूर
थोड़ी देर के लिए
जहाँ वह अपनी
इच्छाओं और देह को भूलकर सो सकेगी
रो सकेगी जहां वह बिना किसी संताप के !!!!

मीठा दर्द

एक अनाम सा मीठा दर्द,
हमारी पलकों पर लहरा उठी थी
और,
और एक सुगंधित चमन
हमारी किस्मत में गुनगुनाता
हुआ उगा था
जिसकी खुशबू अन्तरिक्ष में
फैलता रहा दूर क्षितिज तक
उस परिभाषा को फैलाता रहा खूशबू सा,
जो मेरी भी थी, तुम्हारी भी थी,
अपनी परिभाषा को देखा है मैने
तुम्हारी परिभाषा होते
पाई है कविता के शक्ल में आस-पास
सच,
मेरी अधूरी परिभाषा की पूर्ति हो तुम
संवेदना बन उत्तर देती हूँ मैं तुम्हें
तुम्हारी याद में एक परिभाषा बन
देखो न,
फिर भी हैं
इक परिभाषा से अपरिभाषित हम-तुम!

प्रश्न

एक प्रश्न मन में उठ रहा
कुछ यूं है मुझसे पूछता
तुम राग क्या अलापते
तुम व्यंग्य क्यूँ हो साधते?
एक प्रश्न मन में उठ रहा
क्यूँ रूष्ठ हुए मुझसे बोलो
क्यूँ मौन आज तेरी वाणी
क्यूँ इतना मायूस हुआ तू
क्यूँ सूखा मुंह का पानी??
इक प्रश्न मन में ऊठ रहा
मै बात वहाँ की बतलाऊँ
जब प्रश्न ये भीतर आया था,
ऐसा लग रहा था मानो
विष से तुने नहलाया था
बिचारों का संघर्ष ये कैसा
फूट डालने आया था
मलीन कर गया देह को
ये कैसा षड्यंत्र रचाया था?
आलिंगन क्यूँ दिया पीड़ाओं को
ये कैसा बोझ उठाया था?
सुख बाँटने की कोशिश में
तूफान दुखों का आया था!!!!

लालसा

बरसों से
सुख बोने की लालसा में
शायद,
दुःख बोयी होगी तुम
तभी न
हर खुशी के मौके में
गम मिला तुझे
तुम अनभिज्ञ थी
बह बीज,
जिसे तुम खुशी के धोखे में
बोयी थी,
गमगीन थे
पहले से ही
या तेरी लालसा ने
इन टूटे सपनों का जहर
जो व्याप्त है
तेरी रग रग में
सिमट गई है
उन खुशी के साये में
हर बार
नए खुशी को
गम में परिणत करने!!!

सोच

मेरी हर सोच में हो तुम
तुम्ही तक सोच मेरी है
मेरे सपने मेरी नींदे
अमानत है ये सब तेरी !
मेरे तकदीर में तुमको
लिखा है कुछ खुदा ने यूँ
जो तुम ना हो तो मर जाऊं
जो तुम हो तो मैं जिन्दा हूँ!
मेरे हाथों में बसती है
तेरी खूशबू मेरे हमदम
मेरी ऑखो में रहती है
तेरी तस्वीर अब हरदम!
मेरी परछाईयों में भी
तेरा ही अक्श है दिखता
जो सांसें चल रही है यूँ
ये तो एहसान है तेरा !
ये धड़कन कब की रूक जाती
जो तेरा साथ न होता
अगर तुम ही नहीं होते
तो फिर मैं भी नहीं होती!

पयोधि

मन पयोधि की चंचल लहरें
मदमायी, बौराई है
अगनित-अगनित भाव लिए
उल्लास प्रीति रस लाई है!
उछल-उछल कर लहरें
जैसे भावों में अंगराई है
उथल-पुथल बाधाओं से
टकराकर
तटबन्धों से प्रीति निभाई है!
कभी मातृ-सा स्नेह लुटाती
जख्मों को सहलाती है।
हौले-हौले मुस्काती वो
जीवन का पाठ पढ़ाती है!
मन पयोधि की शीतल लहरें,..
हर दु:ख हर लेने को आतुर है,
कभी जूझती चट्टानों से
दृढ़वत होकर करती कठिन प्रहार बहुत
कह जाने को
लड़ उठती है मौन पड़ा व्रत तुड़वाने को!
मन पयोधि की अविचल लहरें
आशा का संचार लिए
नव जीवन भाषा सार लिए
सिखलाती लड़ना जूझ-जूझ कर
मिटते जाना,..या फिर विजयी होना मन पयोधि की,..!!

किसे सींचूँ?

ये कैसा शून्य उपवन है
न है माली, न है मौसम
न पुष्पों का बसेरा है
घरों के नाम पर खाली यहां
बंजर का डेरा है!
दिखाबे का है हर रिश्ता
दिखाने को हर सामां है
जहाँ रिश्तों के आंगन में
विरानों का बसेरा है!
न तो मैं हूँ न मेरा है न
मेरे लिए यहां कुछ है,
मगर फिर भी न जाने क्यूँ
समेटे साथ मेरे हैं,
मेरी सांसे, मेरी आहें,
मेरी जज्बात, मेरा मन
मेरे अस्तित्व के आगोश में
ये कैसा सबेरा है!!

आस्था के दीपक

प्रेम की राहों में
जल रहे आस्था के दीपक को
क्यों बार बार
झांकते हो तुम?
राहों पर मेरी जो
रौशनी फैली है
क्यूँ लौ की ऊंचाई
बार बार मापते हो तुम?
तपन का एहसास तो करो
अग्नि में समर्पण के
जलो तो सही
क्यूँ दूर से ही तपन
ऑकते हो तुम?
रूठते हो झगड़ते हो
और फिर मान जाते हो
हाँ! दिल ए जान से
प्यार मुझसे ही
करते हो तुम! !!!

ख्वाहिशें

दिल के जज्बातों को नर्म लबों तक
न आने दिया हमने
ख्वाहिशें रह गई दबके जिसकी
फरियाद न किया हमने
दिल की कश्ती को जज्बात की लहरों पे
हमने छोड़ दिया
ले जाओ कूल या मझधार में डूबो दो दामन
कोई शिकवा, न किया है, न करेंगे हमदम,..
ये महज ख्वाब था और ख्वाब ही रहेगा हरदम
कि कोई मीत अपनी साहिल का सहारा देगा
मेरे ख्वाबों को सच करने का किनारा देगा,..
क्योंकि,..
जिसे देखा, जिसे जाना, जिसे विश्वास से सींचा हमने
किया जिस पर नाज कि सपनों का धरातल है मिला,
वो निकला एक अदना सा मुखौटा ओढ़े (फरेबी)
विषय वासना में रत कामी "सुनामी"
जो ले गया बहाके ख्वाब और ख्वाहिशें मेरी
वक्त है कि उठूँ और समेंटू सपने अपने
ख्वाबों के लिए राहें नई तलाश करूँ
मेरे मौला मुझे बस थोड़ी सी हिम्मत दे दे
मेरी अनवरत कोशिशों में बरकत दे दे
इन्सानों पे भरोसा करके तो हमने देख लिया
अब करना नहीं कोई गलती मझे खुद पे भरोसा है
मै पा लूँगी जो चाहत है---
क्योंकि अब मैंने पाया है
मेरे विश्वास में हरपल तुम्हारा ही नज़ारा है,
जहाँ होते हो तुम वहाँ जीत का अपना सितारा है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - रेखा कुमार
जन्म - 25 मई , बिहार
शिक्षा - स्नातकोत्तर (दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान)
पता - बहादुरगढ़ (हरियाणा)
ई मेल - riyariddhi927@gmail.com
प्रकाशन - साझा संकलन -3
सम्मान - तीन

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-10-9
मूल्य- 55/-